

डॉ. डैनियल के. डार्को, ल्यूक का सुसमाचार, सत्र 5, शिशु कथा, भाग 3, मंदिर प्रवचन

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह सत्र 5, शिशु कथा, भाग 3, मंदिर प्रवचन है।

हमारी बिब्लिका ई-लर्निंग श्रृंखला में लूका के सुसमाचार के अध्ययन में आपका स्वागत है।

हमने अब तक लूका में परिचय के बारे में कुछ बातें देखी हैं, और हमने परीक्षण किया और शिशु कथा को देखना शुरू किया। इस बिंदु पर हम उस चरण में हैं जहाँ हम मंदिर प्रवचन को देख रहे हैं। मंदिर प्रवचन में जाने से ठीक पहले, हम जन्म कथाओं को देख रहे थे, यह देख रहे थे कि जॉन बैपटिस्ट और उनके जन्म के आस-पास की परिस्थितियाँ कैसे प्रभावित हुईं, इस प्रक्रिया में किए गए भविष्यसूचक दावे या घोषणाएँ, विशेष रूप से उनके पिता जकर्याह के भविष्यसूचक कथन।

फिर, हमने यीशु मसीह के जन्म और जन्म के आस-पास की परिस्थितियों को भी देखा, जो उन्हें बेथलेहम ले आया, और जहाँ वह चरनी में भेड़ों के साथ जन्म दे रहा था। फिर, हमने लूका के सुसमाचार में शिशु यीशु के आगंतुकों को देखकर सत्र समाप्त किया। मैथ्यू के विपरीत, मैं इस तथ्य पर जोर देता हूँ कि आगंतुक लूका में चरवाहे हैं।

यहाँ, हम उन कथाओं को देखने जा रहे हैं जो बताती हैं कि जब यीशु को मंदिर में लाया गया था और जब जॉन को मंदिर में लाया गया था, तब क्या हुआ था। और कुछ बातें जो इन मुलाकातों में होंगी। इन्हें मैंने मंदिर प्रवचन कहा है।

इसलिए कृपया ध्यान से देखें क्योंकि हम शिशु कथा के व्यापक ढांचे में मंदिर प्रवचन को देखते हैं। यहाँ, अध्याय 2 की आयत 21 से, ल्यूक हमारा ध्यान यीशु के जन्म की ओर आकर्षित करता है। और मैंने पढ़ा, आठ दिनों के अंत में जब उसका खतना किया गया, तो उसका नाम यीशु रखा गया, जो गर्भ में गर्भ धारण करने से पहले स्वर्गदूत द्वारा दिया गया नाम था।

पद 22: और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उनके शुद्ध होने का समय आया, तो वे उसे यहोवा के सामने पेश करने के लिए यरूशलेम ले गए। जैसा कि यहोवा की व्यवस्था में लिखा था, हर नर जो पहले गर्भ को खोलता है, वह यहोवा के लिए पवित्र कहलाएगा, और यहोवा की व्यवस्था में कहे अनुसार एक जोड़ा कबूतर या दो कबूतर का बलिदान चढ़ाएगा। अब यरूशलेम में शिमोन नाम का एक आदमी था, और वह आदमी धर्मी और भक्त था, और इस्राएल की शान्ति की प्रतीक्षा कर रहा था, और पवित्र आत्मा उस पर था।

और पवित्र आत्मा के द्वारा उसे यह प्रकट किया गया था कि जब तक वह प्रभु मसीह को नहीं देख लेता, तब तक वह मृत्यु को नहीं देखेगा। और वह आत्मा में होकर मन्दिर में आया, और जब माता-पिता बालक यीशु को व्यवस्था के रीति-रिवाज के अनुसार उसके लिए करने को लाए, तो

उसने उसे गोद में लिया और परमेश्वर को धन्यवाद दिया और कहा, हे प्रभु, अब तू अपने वचन के अनुसार अपने दास को शान्ति से विदा करता है। क्योंकि मेरी आँखों ने तेरा उद्धार देखा है, कि तू ने सब लोगों के साम्हने एक ज्योति तैयार की है, कि अन्यजातियों पर प्रकाश हो, और तेरी प्रजा इस्राएल की महिमा हो।

यहाँ, जब हम इस घटना को देखते हैं, तो हम मरियम और यूसुफ के धार्मिक जीवन के एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्से को देखना शुरू करते हैं। मरियम और यूसुफ यहूदी होने के नाते अपने धार्मिक विश्वासों के प्रति इतने समर्पित हैं कि बालक यीशु को पाकर वे सभी धार्मिक दायित्व पूरे हो जाएँगे जिनकी उनसे अपेक्षा की जाती है। वे नासरत से आते हैं, कल्पना करें कि यरूशलेम से 70 से 80 मील दूर, और फिर भी वे मंदिर में आकर वही करेंगे जो उनसे अपेक्षित है।

यीशु के मंदिर में होने के संदर्भ में मैं तीन बातें जल्दी से बताना चाहूँगा। पहली बात है लड़के का समर्पण। माना जाता है कि हर पहले जन्मे बच्चे को जन्म के लगभग छह सप्ताह बाद मंदिर में समर्पित कर दिया जाता है।

यह महत्वपूर्ण है कि यहूदी इसका पालन करें, और यहूदी होने के नाते यीशु के माता-पिता इसका पालन करने के लिए तैयार थे। हम यह भी जानते हैं कि मरियम के गर्भ से आने वाली पहली संतान होने के नाते, मरियम को बच्चे को जन्म देने के 40 दिनों के भीतर या 40 दिनों के बाद धार्मिक शुद्धिकरण से गुजरना पड़ता है, जो मंदिर में भी किया जाएगा। ये दो चीजें मिलकर मरियम और यूसुफ को मंदिर में लाती हैं।

यदि आप परंपरा का पालन करना चाहते हैं, तो यह एक ऐसी परंपरा है जो लैव्यव्यवस्था 12 में अधिक बताई गई है, जो यहूदियों को उस विशेष दायित्व की याद दिलाती है। फिर, जब वे मंदिर में पहुँचेंगे, तो हम दो महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएँगे। यहाँ भी, एक पुरुष और एक महिला।

ल्यूक को अपने बचपन की कहानी में नर-मादा की जोड़ी बनाना पसंद है, जैसा कि हम देखते हैं कि एक स्वर्गदूत जकर्याह के सामने प्रकट होता है, और एक स्वर्गदूत मरियम के सामने प्रकट होता है। यहाँ, गवाहों के संदर्भ में, हम एक पुरुष, शिमोन और एक महिला, अन्ना को देखने जा रहे हैं। जब हम गवाहों के बारे में बात करते हैं तो आपको दूसरी बात पर ध्यान देना चाहिए कि यहूदी परंपरा के अनुसार दो या तीन लोग घटना के लिए उपयुक्त गवाह होते हैं।

यहाँ, जहाँ तक मसीहा के आगमन का सवाल है, जो कुछ घटित हो रहा है, उसके बारे में हमारे पास दो गवाह होंगे। शिशु के समर्पण और दो गवाहों के संदर्भ में, मैं चाहूँगा कि हम खतना जैसे मुद्दों पर जल्दी से नज़र डालें, जिसके बारे में हमने पहले जॉन बैपटिस्ट के संबंध में बात की थी, और यह भी कि इस बच्चे को मंदिर में कैसे पेश किया जाएगा। लूका 2, 21-24 कुछ ऐसी चीज़ों की ओर हमारा ध्यान जल्दी से खींचता है जो होने वाली हैं।

आठ दिन के अंत में, यह अपेक्षित है कि बच्चे का खतना किया जाए। इसलिए, आठवें दिन, कानून के अनुसार, यीशु का खतना किया गया। बच्चे को बुलाया जाना चाहिए, और नामकरण महत्वपूर्ण है।

उसका नाम तो रखना ही था। अब जो नाम देवदूत ने बताया था वही उसका नाम होना चाहिए। यहाँ हम कोई बहस नहीं कर रहे हैं।

जॉन बैपटिस्ट के विपरीत, उसे उसके पिता के नाम से पुकारा जाना चाहिए या नहीं, यह यहाँ मुद्दा नहीं है। स्वर्गदूत ने नाम दिया था, और नाम उसे दिया जाएगा। यहोवा बचाता है।

यीशु उसका नाम है। और फिर हम इस तथ्य पर भी जोर देते हुए देखेंगे कि वे मंदिर जा रहे हैं, लूका हमें याद दिलाता है, क्योंकि वे धर्मनिष्ठ यहूदी हैं। वे मूसा के कानून का पालन करना चाहते हैं।

वे प्रभु के कानून का पालन करना चाहते हैं। हम आधुनिक ईसाइयों के लिए, मैं इस तथ्य पर अधिक जोर नहीं दे सकता कि हमें इस विचार में बहुत सावधान रहना चाहिए कि कुछ लोग यह प्रस्ताव और प्रचार करते हैं कि ईसाई धर्म यहूदी धर्म को दबाने के लिए आता है या ईसाई धर्म यहूदी धर्म को बदलने के लिए आता है और यहां तक कि कुछ लोगों को यहूदियों से नफरत करने की गुंजाइश भी देता है, और यह देखने के लिए कि क्या वे यहूदियों से छुटकारा पा सकते हैं ताकि चर्च फल-फूल सके। यह नए नियम में जो चल रहा है उसका गलत अर्थ है।

भगवान ने एक यहूदी के रूप में हमारी दुनिया में आना चुना, और यीशु के जीवन के इर्द-गिर्द जो कुछ भी चल रहा है, वह उन माता-पिता को दर्शाता है जो यहूदी धर्म के अनुयायी हैं, और विशेष रूप से ल्यूक में, ईसाई धर्म को दूसरे मंदिर यहूदी धर्म के संदर्भ में समझा जाना चाहिए, यहाँ तक कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में भी। इसलिए, अध्याय 2 की आयत 22 में कहा गया है, और जब उनके शुद्धिकरण का समय आया, तो मूसा के कानून के अनुसार, वे उसे प्रभु के सामने पेश करने के लिए यरूशलेम ले आए। यह यहूदी मंदिर में होगा।

जैसा कि प्रभु के नियम में लिखा है, हर नर जो सबसे पहले गर्भ खोलता है, वह प्रभु के लिए पवित्र कहलाएगा। और फिर, श्लोक 24 में, हमें यह भी झलक मिलती है कि बलिदान के रूप में क्या चढ़ाया जाएगा। वे एक जोड़ा कबूतर या दो बच्चे कबूतर चढ़ाएंगे।

इससे हमें मैरी और जोसेफ की आर्थिक स्थिति के बारे में कुछ पता चलेगा। मैं आगे बढ़ता हूँ और इन माता-पिता के धर्मपरायण स्वभाव के बारे में कुछ बताने की कोशिश करता हूँ। चार बातें।

आठवें दिन यीशु का खतना करना यह दर्शाता है कि, वास्तव में, वे अब्राहम के वंशज हैं जो अब्राहमिक परंपराओं के प्रति प्रतिबद्ध हैं। दूसरा, उसका नाम रखना परंपरा के अनुसार और स्वर्गदूत ने जो कहा था उसके अनुसार करना है। तीसरा, टी के सख्त शुद्धिकरण कानूनों का पालन करना, जैसा कि हम देखेंगे, इस तथ्य को दर्शाता है कि वे धर्मनिष्ठ यहूदी हैं जो कानून के अक्षर का पालन करना चाहते हैं।

और जैसा कि हमें लूका में पहले बताया गया था, वे धर्मी लोग थे। और चौथा, वे जो बलिदान देंगे, जो कबूतर या दो कबूतर वे देंगे, वह उनकी आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। लूका हमें यह बताना चाहता था कि उन्होंने बलिदान के रूप में जो चढ़ाया, उससे पता चलता है कि वे गरीब थे।

लैव्यव्यवस्था 12:6 से 8 के अनुसार, यह वह बलिदान है जिसे गरीब लोग जो पहली और सबसे महंगी बलि नहीं दे सकते, वे शुद्धिकरण अनुष्ठानों के लिए मंदिर में ला सकते हैं। वास्तव में, लैव्यव्यवस्था 12:8, विशेष रूप से, बताता है कि यदि आप एक मेमना नहीं खरीद सकते हैं, तो उसे दो कछुआ कबूतर या दो कबूतर लेने चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे ल्यूक ने अपने सुसमाचार में उद्धृत किया है। इसलिए, शिशु यीशु को मंदिर में लाया जाता है।

कानून का पालन और कानून की अपेक्षाएँ पूरी की जाती हैं। यह बहुत बढ़िया है, है न? लेकिन ल्यूक के लिए, यह पर्याप्त नहीं है। उन्होंने प्रथागत रीति-रिवाजों को पूरा किया है।

उन्होंने कानून की आवश्यकताओं को पूरा किया है। उन्होंने धार्मिक अनुष्ठान को पूरा किया है। लेकिन यह कोई साधारण बच्चा नहीं है।

यह मसीहा है, दुनिया में आने वाला मसीहा। लूका ने कहा कि मंदिर में दो गवाह होंगे जिनका जीवन मसीहा को आते देखने के लिए प्रतीक्षा करने में समर्पित था। ये दो गवाह ऐसे गवाह हैं जिन पर हमें पूरा ध्यान देना चाहिए।

जब हम पाठ के अपने सामान्य अध्ययन में उन्हें देखते हैं तो वे पर्याप्त ध्यान नहीं देते हैं। पहला गवाह शिमोन है। लूका हमें बताता है कि शिमोन एक धर्मी और भक्त व्यक्ति था।

वह एक धार्मिक व्यक्ति था जो प्रभु के सामने सही काम करने के लिए समर्पित था। वह इस्राएल के सांत्वना का इंतज़ार कर रहा था। वह उस समय का इंतज़ार कर रहा था जब मसीहा आएगा और दुखी इस्राएल, हैरान इस्राएल, रोमन शासन के अधीन इस्राएल, विदेशी इस्राएल जो यहूदिया से गलील तक का पता लगा रहे हैं, यहूदी जो अब शासन के अधीन हैं, और अन्यजातियों का शासन।

वह उस सांत्वना की प्रतीक्षा कर रहा है जब मसीहा आएगा, और परमेश्वर अपना शासन स्थापित करेगा। शिमोन तब तक मृत्यु को नहीं देखेगा जब तक वह मसीहा को नहीं देखेगा। लूका हमें बताता है कि शिमोन का सामना शिशु यीशु और उसके माता-पिता से होगा, और वह कहेगा, बेशक, यही वह दिन है।

और वह अपनी टिप्पणियों से माता-पिता को आश्चर्यचकित कर देगा। शिमोन और उसके अवलोकनों को जारी रखते हुए, हम यह भी महसूस करते हैं कि लूका हमें यह बताने में जल्दी करता है कि शिमोन पवित्र आत्मा का व्यक्ति था। लूका के लिए, यदि आप पवित्र आत्मा को बाहर निकालते हैं, तो आप बहुत कुछ बाहर निकालते हैं।

वह पवित्र आत्मा का था। हमें बताया गया है कि उसे मंदिर जाने के लिए आत्मा ने प्रेरित किया था। वह परमेश्वर की स्तुति करता था, और जिस तरह से वह अपनी स्तुति व्यक्त करता था, उससे यीशु के माता-पिता भी आश्चर्यचकित हो जाते थे।

वास्तव में, शिमोन के शब्दों में, शायद मुझे पद 21 और 25 से पढ़ना चाहिए। अब यरूशलेम में एक आदमी था जिसका नाम शिमोन था। और यह आदमी धर्मी और भक्त था, और इस्राएल की शान्ति की प्रतीक्षा कर रहा था।

और पवित्र आत्मा उस पर था। और पवित्र आत्मा के द्वारा उसे यह बताया गया था कि जब तक वह प्रभु के मसीह को न देख लेगा, तब तक वह मृत्यु को न देखेगा। और वह आत्मा में होकर मन्दिर में आया।

और जब माता-पिता बालक यीशु को व्यवस्था के रीति-रिवाज के अनुसार उसके लिए करने के लिए लाए, तो उसने उसे अपनी बांहों में उठा लिया और परमेश्वर को धन्यवाद दिया और निम्नलिखित कहा: हे प्रभु, अब तू अपने वचन के अनुसार अपने दास को शांति से विदा कर रहा है, क्योंकि मेरी आँखों ने तेरा उद्धार देखा है जिसे तूने सभी लोगों की उपस्थिति में तैयार किया है, अन्यजातियों के लिए प्रकाश के लिए एक ज्योति। और वैसे, ESV का अनुवाद अन्यजातियों से होगा।

लेकिन यह वचन वास्तव में राष्ट्रों के लिए रहस्योद्घाटन का प्रकाश और आपके लोगों इस्राएल के लिए महिमा का कारण होगा। और उसके पिता और उसकी माँ, अर्थात् यूसुफ और मरियम, उसके बारे में कही गई बातों से आश्चर्यचकित थे। और शिमोन ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उसकी माँ मरियम से कहा, देखो, यह बच्चा इस्राएल में बहुतों के पतन और उत्थान के लिए और एक संकेत के लिए नियुक्त किया गया है जिसका विरोध किया जाता है।

और तलवार तुम्हारी आत्मा को भी छेद देगी, ताकि बहुत से दिलों के विचार प्रकट हो सकें। शिमोन मंदिर में इस बच्चे के बारे में मसीहा के रूप में गवाही देने वाला पहला गवाह होगा। फिलहाल, कल्पना करें कि आप यीशु के माता-पिता हैं, और ये सारी बातें आपके बेटे के बारे में सामने आ रही हैं।

और आप इन सभी बातों के बीच में हैं जो आप स्वर्गदूतों से सुनते हैं, गवाह आते हैं, लोग ये बातें कहते हैं, और आपको यकीन नहीं होता कि क्या हो रहा है। और आपको लगता है कि आप बस पारंपरिक कार्यवाही का अनुसरण कर रहे हैं। और इसलिए, आप मंदिर में आते हैं।

और अब आपको आश्चर्य होगा कि यह आदमी शिमोन मंदिर में आता है। वह हमेशा अपना समय वहाँ नहीं बिताता। लेकिन हमें बताया गया है कि वह एक भविष्यवक्ता की तरह मंदिर में आता है।

पवित्र आत्मा उस पर था। वह आत्मा के द्वारा निर्देशित था। लूका हमें बताता है कि उस समय उसे मंदिर में रहने के लिए आत्मा द्वारा प्रेरित भी किया गया था।

और यही वह बात है जो वह बच्चे के बारे में कहता है। मानो कह रहा हो कि मसीहा आ गया है, लेकिन मरियम, मरियम को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि शायद यह बच्चा जिस तरह से मरने जा रहा है, उससे उसे भी कुछ परेशानी होगी। लेकिन यह मसीहा के रूप में आता है।

लूका फिर हमें दूसरी गवाह अन्ना के बारे में बताता है। अन्ना, यूनानी में, हिब्रू में हन्ना है। वह दूसरी गवाह होगी, एक उल्लेखनीय महिला, एक उल्लेखनीय बूढ़ी महिला।

हमें बताया गया है कि वह एक भविष्यवक्ता थी और काफी बूढ़ी थी। यह उल्लेखनीय है क्योंकि ल्यूक उन लोगों में से एक है जो हमें बताने जा रहे हैं कि भविष्यवक्ता होते हैं। मुझे यह बहुत ही दिलचस्प लगता है कि ल्यूक हमें बताता है कि यहाँ एक महिला भविष्यवक्ता है।

और फिर, प्रेरितों के काम की पुस्तक में कहीं, वह हमें बताता है कि फिलिप की बेटियाँ भी भविष्यवक्ता हैं। जब वह फिर से भविष्यवक्ताओं का उल्लेख करता है, तो वह अगाबस जैसे भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों के काम 13 में कुछ भविष्यवक्ताओं का उल्लेख करता है, जो चर्च में प्रतिभाशाली नेताओं के बारे में बात करते हैं, कि वे शिक्षक और भविष्यवक्ता हैं। आप देखिए, आधुनिक समय के विद्वानों को लगता है कि वे सबसे अधिक समतावादी हैं।

लूका की दुनिया में आपका स्वागत है। लूका के लिए, जब परमेश्वर लोगों का उपयोग कर रहा है, तो वह लिंग की परवाह किए बिना लोगों का उपयोग कर रहा है। यहाँ, वह कह रहा है कि यीशु मसीह के जन्म के आस-पास के समर्पण और शुद्धिकरण संस्कारों के प्रमुख गवाहों में से एक महिला होगी, उनमें से एक अन्ना है, जो एक भविष्यवक्ता थी।

अन्ना, शादी के सात साल बाद, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप उस वाक्य को ग्रीक में कैसे पढ़ते हैं, 84 साल तक विधवा रही। इसलिए, यह बूढ़ी महिला और एक भविष्यवक्ता आने वाली है और इस बच्चे से मिलने जा रही है। हमें अन्ना के धार्मिक जीवन के बारे में बताया गया है।

अन्ना ने अपना जीवन उपवास और प्रार्थना के लिए समर्पित कर दिया। हमें यह भी बताया गया है कि उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और यरूशलेम के उद्धार की प्रतीक्षा कर रहे सभी लोगों से बात की। और ऐसा हुआ कि वह बच्चे की दूसरी गवाह बनने जा रही थी।

अब, अगर मैं यहाँ एक मिनट रुककर विषय से हटना चाहूँ, तो यहाँ हमें अपनी यादों को ताज़ा करने और इस तथ्य की सराहना करने की ज़रूरत है कि नए नियम में परमेश्वर जो कर रहा है वह लिंग राजनीति से बंधा नहीं है, कि परमेश्वर ने हमेशा ऐसे पुरुषों और महिलाओं का उपयोग किया है जो उसके लिए उपलब्ध और समर्पित हैं। लूका के सुसमाचार के दूसरे अध्याय में, यीशु के जन्म और समर्पण के बारे में गवाही के ठीक बगल में, यह एक महिला है जो कोई साधारण महिला नहीं है। शिमोन ने एक भविष्यवक्ता के रूप में बात की, लेकिन अन्ना का नाम एक भविष्यवक्ता के रूप में लिया गया है।

उन्हें न केवल एक भविष्यवक्ता के रूप में नामित किया गया है। उन्हें प्रार्थना और उपवास के प्रति समर्पित व्यक्ति के रूप में भी वर्णित किया गया है। उनकी भविष्यवाणी परंपरा में, वह यरूशलेम के उद्धार की प्रतीक्षा कर रही थी। वास्तव में एक भविष्यवक्ता।

जब हम आज इस बात पर अटकलें लगा रहे हैं कि पुरुषों की भूमिका क्या है और महिलाओं की भूमिका क्या है, और कुछ कहते हैं कि हमने इसे सही समझा और कुछ कहते हैं कि हमने इसे गलत समझा और यह सब, कृपया समझें कि लूका, जो हमें प्रेरितों के काम में यीशु के जीवन,

कार्य और सेवकाई और प्रारंभिक ईसाई धर्म का सबसे व्यापक विवरण देता है, यह दिखाने के लिए सावधान है कि परमेश्वर ने उन पुरुषों और महिलाओं के साथ काम किया है जो शुरुआत से ही उपलब्ध हैं। लूका अध्याय 2, श्लोक 39 से 40 में, लूका लिखता है, और जब यीशु के माता-पिता ने प्रभु के कानून के अनुसार सब कुछ पूरा कर लिया, तो वे गलील और नासरत शहर में लौट आए, और वहाँ बच्चा बड़ा हुआ और मजबूत हुआ, बुद्धि से भरा, और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था। जैसे कि यह पर्याप्त नहीं है, लूका अभी भी हमें यह बताने की कोशिश कर रहा है कि यहूदी भविष्यवाणी प्रवचन ने दिखाया है कि एक बड़ा भविष्यवक्ता आएगा, और इसलिए हम जान की कहानी के साथ क्या हो रहा है, इसे नहीं भूल सकते।

इसलिए, हमें बताया गया है कि जब यूहन्ना की घटना घटती है, और यीशु अंदर आते हैं, तो यीशु इस महत्वपूर्ण भूमिका को पूरा करते हैं, और दूसरे चरण में, चीजें बहुत तेज़ी से शुरू होने वाली हैं। मंदिर में समर्पित, यहूदी परंपरा के अनुसार खतना। यहाँ हम यीशु को फिर से मंदिर भाग 2 में देखते हैं; यहाँ यह एक पूरी तरह से अलग कहानी होने जा रही है।

पद 41 से, यीशु अब फसह के लिए मंदिर में होंगे, और हमें बताया गया है कि वह 12 साल की उम्र में यहाँ होंगे; खैर, 12 महत्वपूर्ण है। लड़कियों को एक समय में शादी और सगाई के लिए दिया जा सकता था। पुरुष के लिए, आप सोचते हैं कि आधुनिक समय में हम मिल्नवाह के बारे में क्या बात करते हैं, वह जीवन के एक चरण में धीरे-धीरे परिपक्वता की ओर बढ़ रहा है, वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण चरण।

माता-पिता और यीशु इस तीर्थयात्रा पर यरूशलेम जाएँगे, और शायद मुझे 41 से 52 तक का पाठ पढ़ना चाहिए। अब, उसके माता-पिता हर साल फसह के पर्व पर यरूशलेम जाते थे, और जब वह 12 साल का था, तो वे रीति-रिवाज के अनुसार वहाँ गए। जब पर्व समाप्त हो गया, तो जब वे लौट रहे थे, तो बालक यीशु यरूशलेम में ही रह गया। उसके माता-पिता को यह पता नहीं था, लेकिन उसे एक समूह में समझकर, वे एक दिन की यात्रा पर निकल गए, लेकिन फिर उन्होंने रिश्तेदारों और परिचितों के बीच उसकी खोज शुरू कर दी, और जब वे उसे नहीं पाए, तो वे खोजते हुए यरूशलेम लौट आए।

तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच बैठे, उनकी सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। सब सुननेवालों ने उसकी समझ और उत्तरों से चकित होकर उसके माता-पिता को भी उसे देखकर अचम्भा किया। और उसकी माता ने उससे कहा, हे पुत्र, तू ने हम से ऐसा क्यों किया? देख, तेरे पिता और मैं बड़ी चिन्ता में तुझे ढूँढ़ते रहे हैं।

और उसने यीशु बनकर उनसे कहा, तुम मुझे क्यों ढूँढ़ रहे हो? क्या तुम नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में होना चाहिए? उन्होंने जो कुछ उसने उनसे कहा था, उसे नहीं समझा, और वह उनके साथ नीचे चला गया। वे नासरत में आए और उनके अधीन हो गए, और उसकी माँ ने सब बातें अपने मन में रखीं। और यीशु बुद्धि और डील-डौल में बढ़ता गया और परमेश्वर और मनुष्य के अनुग्रह में बढ़ता गया। हम यहाँ मंदिर में यीशु की दूसरी यात्रा में पाते हैं कि वह तब तक रहेगा जब तक माता-पिता चले नहीं जाते।

लेकिन कृपया, इससे पहले कि हम माता-पिता पर गैर-जिम्मेदार होने का आरोप लगाएं, कि उनके साथ एक 12 वर्षीय बच्चा यात्रा कर रहा है, और वे एक दिन, एक पूरा दिन, बिना यह देखे जा सकते हैं कि बच्चा गायब है, मैं आपको कुछ सांस्कृतिक अंतरालों से अवगत कराता हूँ। संस्कृति ऐसी थी कि फसह जैसे त्यौहार पर दोस्त, रिश्तेदार और पड़ोसी गलील से यरूशलेम तक कारवां में यात्रा करते थे। उस कारवां में, एक सामूहिक संस्कृति में, एक छोटा लड़का, जैसे कि एक 12 वर्षीय, दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ रहने के लिए भरोसेमंद होगा।

सुरक्षा कोई मुद्दा नहीं होगा, और वे भोजन साझा करने के लिए भी तैयार नहीं होंगे क्योंकि संस्कृति इसी तरह काम करती है। उनके लिए यह मान लेना कोई समस्या नहीं होगी कि जैसे वे आए थे, शिशु यीशु या युवा बालक यीशु या किशोर यीशु अभी किशोर नहीं है, बल्कि वह 12 वर्ष का है। वह उनके पड़ोस में कुछ अन्य लड़कों के साथ घूम रहा है, और वे दूसरे समूह के साथ चलने की कोशिश कर रहे हैं। यह माता-पिता के लिए कोई समस्या नहीं है।

वास्तव में, उनके लिए 70, 80 मील की यात्रा करना असामान्य नहीं होगा, जब तक कि वे घर नहीं पहुंच जाते, तब तक बालक यीशु से मुलाकात नहीं होती। लेकिन मैंने देखा कि घर पहुंचने पर क्या होता है: वे उम्मीद करते हैं कि बच्चा भी घर आ जाएगा, लेकिन फिर पहुंचने पर उन्हें पता चलता है कि वह वहां नहीं है। उन्होंने इधर-उधर देखा, थोड़ी देर तक खोज की, और वे वापस यरूशलेम चले गए।

याद रखें, उन्होंने एक दिन की यात्रा की थी; उन्होंने एक और दिन यात्रा की। हमें नहीं पता कि उन्होंने इस बच्चे की तलाश के लिए एक और दिन का इस्तेमाल किया या नहीं। यह उन तीन दिनों के बराबर होगा जब यीशु मंदिर में रहेंगे।

वे आकर उससे मिलते हैं, और यीशु कुछ ऐसा कहते हैं जो काफी गंभीर होता है। अब, मैं आपको याद दिला दूँ कि यूसुफ यीशु का जैविक पिता नहीं है। यूसुफ यीशु का पालक पिता है।

मरियम माँ है। यह बच्चा मंदिर की शिक्षण परंपरा में खुद को डुबोने जा रहा है, और वह सवाल पूछ रहा है और ऐसे जवाब दे रहा है जो बहुत ही गहरे हैं। वे अद्भुत लोग हैं।

और जब वे आए, तो मरियम ने यीशु से पूछा, तुम हमारे साथ ऐसा क्यों कर रहे हो? अब, यूसुफ की स्थिति की कल्पना करो जब लड़के ने कहा, तुम मेरे बारे में क्यों चिंतित हो? मैं वास्तव में अपने पिता के घर में होना चाहिए। खैर, यूसुफ को पिता माना जाता है, है ना? हाँ। उसने कहा कि मैं अपने पिता के घर में होना चाहिए।

वैसे, जब आप पुराने नियम को देखते हैं, तो आपको पिता के रूप में भगवान को बार-बार संदर्भित करने की परंपरा नहीं मिलती है। यह कुछ ऐसा है जो बाद में और अधिक विकसित होने वाला है। पिता के रूप में भगवान की छवि कोई बड़ी छवि नहीं है जो पहले चल रही थी।

लेकिन हम पाते हैं कि यीशु माता-पिता से कह रहे हैं; मुझे अपने पिता के घर में रहना चाहिए। लेकिन फिर लूका हमें याद दिलाना चाहता था कि अगर हम सोचते हैं कि वह बड़ा होकर एक

जिद्दी, उपद्रवी युवा लड़का बनेगा, तो लूका ने कहा कि वह उनके साथ नासरत लौट आया, और वह उनके साथ आज्ञाकारिता में रहा। वह उनके साथ आज्ञाकारिता में रहा।

मुझे जॉर्ज ग्रीन का मंदिर में हो रही घटनाओं का संदर्भ पसंद है जब वह कहते हैं कि यीशु मंदिर में हैं, जो ईश्वर की उपस्थिति का स्थान है। लेकिन वह वहां ईश्वरीय मजबूरी में शिक्षा देने में लगे हुए हैं। मुद्दा यह है कि उन्हें खुद को ईश्वर के उद्देश्य के साथ जोड़ना चाहिए।

भले ही ऐसा लगता हो कि जब वह कहता है, "क्या तुम नहीं जानते कि मुझे अपने पिता के घर में रहना चाहिए?" तो वह कह रहा है, "क्या तुम नहीं जानते कि मुझे परमेश्वर के घर में रहना चाहिए?" मुझे परमेश्वर के काम में खुद को पूरी तरह से लगा लेना चाहिए। हाँ, यहाँ यही हो रहा है।

शिशु यीशु की महत्वपूर्ण आयु, 12 वर्ष, में। हम जानते हैं कि मंदिर में होने वाली हर गतिविधि हमारे परम्परागत विचारों में बहुत सी प्रतिध्वनियाँ दर्ज करेगी, लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मंदिर में 12 वर्षीय बच्चे को पढ़ाते हुए देखकर उसके माता-पिता बहुत आश्चर्यचकित हुए थे। यीशु वही कर रहे हैं जो पारंपरिक यहूदी कहते हैं; अगर मैं 12 वर्ष की आयु में परिपक्व हो जाऊँ, तो मैं धार्मिक गतिविधियों में खुद को और अधिक व्यस्त रख सकता हूँ।

12 साल की उम्र में इसे एक नए स्तर पर ले जा रहा है। इसका मतलब यह नहीं है कि यीशु 12 साल की उम्र में ही सेवकाई शुरू कर देगा। नहीं, वास्तव में, हम यीशु को 30 साल की उम्र में ही सेवकाई शुरू करते हुए सुनेंगे।

लेकिन हम यह भी जानते हैं कि 12 साल की उम्र में यहूदी लड़के के लिए महत्वपूर्ण समय वह था जब यीशु को मंदिर में पाया जा रहा था, जिस तरह से उसने लोगों को सिखाया और सवालों के जवाब दिए, उससे लोगों के होश उड़ गए। वह कद में बड़ा हुआ, बुद्धिमान हुआ, परमेश्वर और मनुष्य के अनुग्रह में बड़ा हुआ। ल्यूक, अगर आपने अभी तक ध्यान नहीं दिया है, तो हम जिसे हम शारीरिक पहचान कहते हैं, उसमें रुचि रखते हैं।

लूका लोगों के शारीरिक कद, उनके बड़े होने के तरीके और उनके व्यवहार का वर्णन करने में रुचि रखता है। लूका ने जॉन बैपटिस्ट के साथ ऐसा किया। अगर आपको याद हो, तो मैंने पहले भी इसका उल्लेख किया था, और उसने बताया कि जॉन कैसे दृढ़ आत्मा के साथ बड़ा हुआ और वह बड़ा हुआ।

और आपने कहा कि यह स्वाभाविक है। नहीं। वह बड़ा होकर एक आदमी बन गया, वह ऐसा कहने की कोशिश कर रहा है।

वह एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाला और अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित व्यक्ति बन गया। और वह जंगल में जाकर रह सकता था। यहाँ, वह फिर से चेहरे की बनावट में आ जाता है।

यीशु सामाजिक रूप से बड़े हुए; उन्हें लोगों का अनुग्रह प्राप्त था। आध्यात्मिक रूप से, उन्हें परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त था। शारीरिक रूप से, वे एक महान व्यक्ति थे।

मानसिक रूप से, वह एक बुद्धिमान व्यक्ति था। ल्यूक चाहता है कि आप यीशु के शारीरिक रूप के बारे में कुछ जानें। ल्यूक वह व्यक्ति है जो हमें बाद में बताएगा कि एक छोटा आदमी था जो उस पेड़ पर चढ़ गया था।

क्या आपको लगता है कि वह संयोग से ऐसा करता है? उसे कद-काठी में दिलचस्पी है। लेकिन यह सिर्फ लूका की बात नहीं है, क्योंकि हम पुराने नियम में पाते हैं कि कभी-कभी किसी नेता के व्यक्तित्व या शारीरिक कद को यह दिखाने के लिए सामने लाया जाता है कि वह व्यक्ति आपके लिए सम्मान और आदर का पात्र है। और लूका कह रहा है, हाँ, यीशु इन क्षेत्रों में पले-बढ़े थे।

बचपन की कहानी को समाप्त करते हुए, मैं क्रेडॉक के एक उद्धरण के साथ समाप्त करना चाहूँगा, जो लिखते हैं कि उनके जीवन के एक बहुत ही महत्वपूर्ण समय में, वे यहूदी धर्म के साथ निरंतरता में थे। और यह यीशु के बारे में है। पहले जन्मे नर बच्चे के लिए वह समय आठ दिनों में खतना, समर्पित या भगवान को प्रस्तुत करना था।

इस मामले में, छह सप्ताह की उम्र में, जब उसकी माँ को शुद्ध किया गया, 12 साल की उम्र में बार मिट्ज्वा, और यहाँ तक कि 30 साल की उम्र में सार्वजनिक जीवन। ये वे क्षण हैं जिन्हें लूका ने यीशु के जीवन में चिह्नित किया है। जब लूका ऐसा करता है और हमें दिखाता है कि इस बिंदु पर, यीशु की सेवकाई पूरी तरह से हो चुकी है, तो उन माता-पिता से क्या अपेक्षा की जाती है जो टोरा का पालन करने वाले यहूदी हैं?

अब वह उस कमी को पूरा करने जा रहा है और हमें अगले चरण पर ले जाएगा, जो हमें 30 वर्ष की उम्र में यीशु की सेवकाई की शुरुआत दिखाना है। मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि एक पाठक के रूप में यदि आप लूका के पहले दो अध्यायों को काट दें, तो आप लूका के सुसमाचार में लूका द्वारा बताए गए मुख्य मुद्दों को नहीं समझ पाएँगे। लेकिन लूका के लिए यह स्थापित करना बहुत महत्वपूर्ण है कि यीशु जो कुछ करने आए थे, वह द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म की परंपराओं के भीतर किया गया था।

वह इसे स्थापित करता है, इसकी पुष्टि करता है, और इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि भविष्यवाणी की पूर्ति सामने आ रही है। क्योंकि एलियाह यूहन्ना के व्यक्तित्व में आता है, और फिर मसीहा आता है, यीशु मसीह। वह मसीहा इन क्षेत्रों में बढ़ता है जिन पर मैंने प्रकाश डाला है।

जॉन, एलियाह, अध्याय 1, श्लोक 80 में, यह भी बताता है कि वह आदमी कैसे बड़ा हुआ। और अब, जैसे कि वह हमें अध्याय 3 खोलने पर एक दशक या उससे अधिक वर्षों का अंतराल देने जा रहा है, वह हमें तैयारी मंत्रालय में ले जाने जा रहा है ताकि हमें दिखाया जा सके कि यीशु का मंत्रालय कैसे सामने आएगा, और फिर भी, यह कैसे जॉन बैपटिस्ट के मंत्रालय से पहले होगा। मुझे उम्मीद है कि आप अब तक शिशु कथा पर चर्चा का बारीकी से पालन कर रहे हैं।

शिशु कथा के तीनों भाग आपको लूका के प्रवचन के बारे में बहुत अच्छी जानकारी देने के लिए हैं कि यहूदी परंपरा में यीशु की सेवकाई किस तरह स्थित है। वह एक विनम्र मसीहा के रूप में आता है, और फिर भी वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है, जैसा कि हम नए नियम में

अन्यत्र जानते हैं। वह एक बहुत ही विनम्र मसीहा के रूप में आता है, जो चरनी में पैदा होता है और चरवाहों जैसे साधारण लोगों द्वारा दौरा किया जाता है।

हाँ, वह मंदिर में जिस तरह से शिक्षा देता है, उससे लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हाँ, अगर आपको लगता है कि नासरत और अन्य जगहों से उसकी सारी पृष्ठभूमि उसे ऐसा व्यक्ति बनाती है जिससे लोग घृणा करते हैं, तो ल्यूक हमें बता रहा है कि इस उम्र में भी, अपने जीवन के 12 साल में, वह पहले से ही शास्त्रों के अपने ज्ञान के आधार और सिखाने की अपनी क्षमता से संबंधित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण तरीकों से ध्यान आकर्षित कर रहा था। यीशु हमारी दुनिया में आ गया है, और जैसे-जैसे हम उसके बारे में और अधिक सीखते हैं, मुझे उम्मीद है कि हम बढ़ेंगे।

मुझे उम्मीद है कि हम इस पर विचार करेंगे। मुझे उम्मीद है कि हम खुद से पूछेंगे कि उनका संदेश और मंत्रालय हमारे जीवन को कैसे प्रभावित कर सकता है। ताकि हम ईश्वर की दुनिया में बेहतर इंसान बन सकें। मेरी प्रार्थना और मेरी आशा है कि हम सब मिलकर प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के संदेश को विनम्रता से अपनाएंगे और ईश्वर की महिमा के लिए ईश्वर की दुनिया में सेवा करेंगे।

धन्यवाद, और भगवान आपको आशीर्वाद दें।

यह डॉ. डैन डार्को हैं जो ल्यूक के सुसमाचार पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 5, शिशु कथा, भाग 3, मंदिर प्रवचन है।